[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3692

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अलौकिक अनुभवों का चितेरा – साजन कुरियन मैथ्यू

एडलिन अब्राहम
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

रंगों से खेलने वाले कलाकार साजन कुरियन मैथ्यू को रंगों की कला यात्रा लिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।साजन कुरियन मैथ्यू के प्रारम्भिक दौर के चित्रों में राजा रवि वर्मा, पाश्चात्य कलाकार डेलाक्रा, माइकल कैरीवैग्यो एंजेलो, सल्वाडोर डाली, विस्टलर, आदि यूरोपीय चित्रकारों की शैली से प्रभावित होकर यर्थाथवादी और अतियर्थाथवादी चित्रण हुआ। ईसा के जीवन पर आधारित उनके तैल चित्र (जो वर्तमान में जबलपुर, केरल, सिहोरा, शहडोल,और दिल्ली, के गिरजाघरों में शोभायमान हैं,) में मानवीय अंग विन्यास, पृष्ठ भूमि, वातावरण आदि में अत्यधिक बारीकी से रंगो का प्रयोग कर वास्तविकता का साक्ष्य अंकित किया है। इन कलाकृतियों को इस रूप विधान में प्रस्तुत करने में कलाकार ने संतुष्ट न होने पर पूरा का पूरा कैनवास मिटा डाला फिर बनाया इसके बावजूद वे संतुष्ट नहीं हुये तो फिर जी जान से मेहनत कर पुनः कृति का सृजन किया ऐसे ही कृति है जिसे कलाकार ने दो बार पूरा–पूरा बनाकर मिटाया और फिर बनाया। है। इनके चित्रों में दर्शक उन सभी भावों से रूबरू हो जाता है और स्वयं के अन्तर्मन में उठने वाले वैचारिक द्वन्द को पाता है। कहने का तात्पर्य यह, कि कलाकार की रंगयोजना, तूलिका घात – भावों को उकेरने में पूर्णतः सफल हुई है। उन्होंने जीवन की सच्चाई को उकेरा है जो उनकी समाजिक प्रतिबद्धता का द्योतक है, समाज की ज्वलंत समस्या से प्रेरित चित्र **"बन्धन"** के संदर्भ में **"कलाकार ने धरती, आकाश, शरीर, छाया में वास्तविक रंगो का यथास्थिति प्रयोग किया है। इस चित्र. आकृति की बनावट में हीं, नहीं रंगों के प्रयोग में भी कोई अतिरंजना नहीं है। धरती पर लेटे शरीर को संन्तुलित कर रहा है – आकाश में लटकता जले पुराने धुँधले कागज का टुकड़ा, जिसमें अंकित है, समाचार पत्र में प्रकाशित उक्त स्त्री की प्रताड़ना का मूल समाचार।"**कलाकार प्रकृति और मानव समाज के सहसम्बंध, गम्भीरता और निर्भरता पर भी चितिंत है–इनका चित्र **"प्राकृतिक परिवर्तन"** इन्हीं मनोभावो को व्यक्त करता है। मानवीय जीवन के परिवर्तन शील क्रम का मर्म दर्शाता यह चित्र जिसमें वर्षा, शीत और ग्रीष्म ऋतुओं के संकेत प्रकृति क्षणों को दर्शाता है। यह प्रयोग–चित्र बदलते मानवीय सम्बंधों और पीढ़ियों के अर्न्तविरोध का ताना बाना है। समाज को हमारे वृद्ध जनों के प्रति सवेन्दनशील बनाने के लिए यह एक अव्हावान है।"सहज मानवीय भावनाओं को व्याकूल करने मे समर्थ छब्बीस चित्रों की श्रृंखला **"लव अ डिजायर" "प्रेम एक इच्छा" जिसमें रंगो की प्रचुरता, माधुर्य, ऐश्वर्य परमोत्कर्ष पर जान पड़ता है। प्रेम जीवन की अद्भुत अनुभूति है, जिसमें हृदय में माधुर्य का सोता फूट पडता है** रंगों की छटाओं में परिर्वतन करते हुये प्रेम सृष्टि की है। रंगों के बारे में वे स्वंय कहते है कि **"रंगो में जान है वे भी सांस लेते है व हमसे बाते करते है अर्न्तमन का संवाद प्रस्फुटित होता है, और फिर कृति सृजन होता। "मूर्त होने का मतलब ही है, लम्बाई, चौड़ाई और गहराई इन तीनों आयामो का सार्थक संश्लेषण। इस संश्लेषण के परिणाम स्वरूप दृश्यमान घटना के साथ अवकाश, रंग, प्रकाश, छाया, काल और त्रिगुणात्मकता जैसे अन्य आयामों के जटिल सहचर्य की रचना होती है। उल्लेखनीय बात यह है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि में कोई आयाम स्वतंत्र अस्तित्व नही रखता सभी आयाम परस्परावलम्बी है, और इसलिए इंद्रिय संवेद्य रचनाएं सम्भव हो पाती है।"**

पहली नजर में भले **"इन कृतियों में कैद विषयों या मिथकों की पडताल करना मशक्कत भरा काम हो लेकिन गाढ़े चटकीले रंगो तथा उसकी संगत मे सिमटे मकसद भरे प्रतीत (इन्स्टालेशन) को थोडी सी संवेदना और जागृत मन के तारो से जुडकर कला रसिको को अपने जीवन में किसी पहलू या पल में जोड देती है। कलाकार के चित्रों में आम आदमी (कामन मैन) की उपस्थिति अहम है।"** स्वर्गीय मूर्तिकार श्याम राजा के शब्द है, **"साजन की कला यात्रा में आया यह पड़ाव काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके पहले के सारे पड़ावों पर साजन की कला यात्रा एक पहाड़ी नदी की तरह है, "जब जैसा धरातल मिला वैसी ही बहने लगी" थी। पर जैसे पहाड़ी नदी जब समतल पर आती है तो एक चौड़े गम्भीर विस्तार में बदल जाती है और उसकी पहचान दूर से ही हो जाती है कि ये वो नदी है ऐसा ही कुछ अब साजन के कला प्रवाह में भी हुआ है उसकी अभिव्यक्ति रंगो, आकारों, कम्पोजिशन के प्रकार सशक्त होकर स्पष्ट रूप लेने लगे है। अधिकांश कम्पोजीशन डायनमिक, बैलेंस के गुण लिये है, कुछ में रंगो और आकारो के बीच में संतुलन बनाया गया है। वही कुछ स्पेस डीविजन से ही संतुलित किये गये है।"**अपने सृजन में भावों और भावना को परिपूर्ण करनें की गरज से (रंगविशेष के अभाव में) रंगीन कागज के टुकडों का प्रयोग बड़े ही चमत्कारिक ढंग से किया जो रंगों की उपस्थिति दर्ज करते है और चित्र पटल दर्शको को रहस्यवाद में बरबस ही खींच ले जाते है, शनै–शनै कागज के रंग कब सृजन पटल से गायब हो गये पता ही नही चला। उन्होने सैटों में काम किया जो दो, तीन से लेकर छब्बीस चित्रों के सैट में चित्र श्रंखला तैयार की।उनके इन काम को देखकर, **"श्री ईब्राहीम अलकाजी जिन्होंने तैयब मेहता के चित्र को अन्तरराट्रीय स्तर पर पहुँचाया जिससे उनकी अति यर्थाथवादी शैली की विश्व स्तर पर पहचान बनी। उन्होंने सैट के छोटे चित्रों में बारीक काम को देखकर कहा कि छोटे कैनवास पर इतना बारीक काम क्यों, बड़ा कैनवास पर काम करों, तुम्हें स्पेस मिलेगी। जब उन्होंने बड़े कैनवास पर भी उतनी ही बारीकी से**

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

काम किया तब अलकाजी ने कहा आप के अंदर इतनी सोच आती कहाँ से है? इतने अकूत विचार कहा से आते, इन्हें कहा से लाते? माईन्ड ब्लोईग।" अलकाजी के कहे ये शब्द कलाकार के लिये जीवन भर के लिये प्रेरणादायी रही जो राह का दीपक बन कर अब भी जल रही है। चटक रंगो को प्रयोग करने की उनकी मशां यह है कि वे जो कहना चाहते है वह पूरी ऊर्जा व तीव्रता से अभिव्यक्त हो सके क्योंकि रंग स्वयं में तरंग व ऊर्जा को समाहित किये हुये होते है।... प्रत्येक रंग एक निश्चित रंग के कम्पन्न के प्रति संवेदनशील रहता है। प्रत्येक रंग एक निश्चित आवृत्ति की ऊर्जा निःसृत करता है। उनके चित्रों मे विरोधी रंगो का बड़ी कुशलता के साथ प्रयोग किया गया है, उनका कहना है प्रत्येक रंग अपने आप में अस्तित्व बनाऐ हुऐ चित्र में समाया हुआ है। कुछ एक नेत्र उद्दीपक रंग जिन्हें कुछ कलाकार प्रयोग करने की हिम्मत नही जुटा पाते वही साजन मैथ्यू बड़ी खूबसूरती से इन रंगों को अपने चित्रों में स्थान देते है, यूँ तो ये रंग आँखों को चुभने वाली श्रेणी में आते है। परन्तु चित्र पटल में आते ही आँखों को भाने लगते है।

चटकीले रंगो के साथ ही अक्षरांकन कला में देवनागरी (संस्कृत), हीब्रू, गणित के सूत्र व चिन्ह सूत्र प्रमेय का प्रयोग किया घड़ी के कलपुंजे उनकी कृति "सिक्स ओ क्लाक" (घड़ी के छोटे से बड़े पुर्जे अलग अलग बिखरे दिखाये गये है।) **"काली तख्ती पर काली खडिया से लिखी लिपियाँ है मेरे चित्र। जो संवाद – लिपि का, भाषा का, वाणी का, संकेतों का और तो और सुनने–समझने वाले का भी मोहताज न हो उसी शाश्वत संवाद का प्रतीक होकर उभरे है मेरे चित्र। बिना शब्दों, बिना अक्षरों की भाषा है ये रंगीन कथानक ... ये अचेतन से अचेतन के बीच घटित मौन संप्रेषण है जिसकी मन, बुद्धि, इंद्रियों की संकुचित सामर्थ्य पर निर्भरता नही...।"** "इनका उद्देश्य इन गणित के सूत्रों को हल करना नही और लिपि को पढना नही वरन इसमें भूत व वर्तमान काल को जोडने की कडी है। चूंकि अक्षरांकन और चित्रांकन साथ साथ चलता है अक्षरांकन में कही कही उखड़ापन अथवा अक्षरों में किनारे टुटन नजर आती है,जैसे उक्त स्थान पर रंग लगते लगते रह गया हो। रंग विशेष के अभाव में रंगीन कागज टुकडों का चातुर्य से प्रयोग किया है ध्यान से देखने पर दर्शक समझते समझते रह जाते है परत दर परत रंग आरोपन करना फिर वाश करना फिर रंग करना, इसी क्रम में कलाकार अपने चित्रों को पूर्णता प्रदान करता है। पृष्ठभूमि से आकृति निकलती अथवा आकृति अग्रभाग से पृष्ठभूमि में जाती प्रतीत होती है। उनकी आकृतियाँ वातावरण मे घुलती हुई लगती है। जो एक रहस्यात्मकता से ज्यादा गतिमयता का बोध कराती है। **"कलाकार ने चित्रों के रंग संयोजन से ही कल्पना को साकार नही किया। अपितु "उनके चित्रों में अवकाश (Space) का सहज साक्षात्कार होता है। अवकाश के शून्यत्व अथवा खालीपन में रूप/भाव को हटाकर उसे भी रचना का अस्तित्व प्रदान किया हैं।"रूसी चित्रकार वासली कि उक्ति है, कि सभी प्रकार की कलाओं में अमूर्त सबसे अधिक कठिन है।**दोनो विधाओं में हृदय के सौन्दर्य पर आवेशो को अभिव्यक्त करने में वे सफल हुए है यह पूरी तौर पर सही है

संदर्भ –

1 *जीवन मूल्य और कला लेखक डॉ0 जूही शुक्ला रीडर एवं अध्यक्ष, प्रकाशक साहित्य संगम इलाहाबाद पृ. क्र. 30*
2 *कला सम्पदा एवं वैचारिकी दिसम्बर 2006 मार्च 2007/10*
3 *होटल समदड़िया जबलपुर में आयोजित 2007 चित्रकला प्रदर्षनी "रंग सृष्टी" प्रेस नोट पाथेय।*
4 *नई दुनिया जबलपुर समाचार पत्र "सबकी बात" शीर्षक लेख से*
5 *कला सम्पदा एवं वैचारिकी दिसम्बर 2006 मार्च 2007/12*
6 *श्री ईब्राहीम अलकाजी कला आलोचक/समीक्षक गैलरी हेरीटेज दिल्ली के स्वामी और नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के डायरेक्टर रहे है।*
7 *My Passion for Reinvention, India Habitat Centre, New Delhi, pg 02*
8 *Catlough, Revelation Exhibition held in Jabalpur. 1 2012 Jabalpur*
9 *Catlough Reivention Exhibition held in Gwalior 2012*
10 *कला सम्पदा एवं वैचारिकी 2006–मार्च 2007/12*
11 *समकालीन कला ललित कला अकादमी प्रकाशन पृष्ठ 50*